Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

भारत और विश्व

भारत के विश्व दृष्टिकोण का विकास

1

भूमिका

इस अध्याय के अंतर्गत इस बात की व्याख्या की गई है कि भारतीय इतिहास, संस्कृति, रीति-रिवाज एवं दार्शनिक परम्पराएँ एवं स्वतंत्रता संग्राम के आदर्शों ने कहाँ तक स्वतंत्रता के बाद विश्व दृष्टिकोण के क्षेत्र एवं विकास में योगदान दिया है। किसी भी राष्ट्र के अन्तर्गत उत्पन्न विश्व का दृष्टिकोण उस समाज की सामाजिक क्रिया में संलग्न होकर तथा उस समाज के सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण के अंश के रूप में गतिशील है। इसलिए यह वातावरण, जो शताब्दियों से संचारित होता आया है और भारतीय मानसिकता के निर्माण में योगदान देता आया है, इन तत्त्वों के महत्त्व का तिरस्कार नहीं किया जा सकता। भारत प्राचीन सभ्यता, संस्कृति एवं परंपराओं का स्थल है। इसलिए भारत को महामानव समुद्र कहा जाता है, जहाँ विश्व की सारी संस्कृतियाँ मिश्रित हो गयी हैं।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू ने स्वतंत्रता के बाद अपनी वैदेशिक नीति के निर्धारण में विश्व के सम्मुख भारतीय दृष्टिकोण के दो पक्षों को उपस्थित किया। प्रथम पक्ष था शांति का रचनात्मक पक्ष और द्वितीय पक्ष था विश्व के विभिन्न राष्ट्रों के बीच सहयोग की भावना का विकास। प्राचीन भारतीय मूल्यों की परंपरा ने भारत की वैदेशिक नीति के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। इसलिए यहाँ पर प्राचीन भारतीय परंपराओं और रीति-रिवाजों का वर्णन करना आवश्यक हो जाता है।

परंपरागत भारतीय मूल्यों के स्रोत

परंपरागत भारतीय मूल्यों के मुख्य स्रोत वेद हैं तथा वेदों के अतिरिक्त मनु स्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति एवं अन्य ग्रन्थ तथा बौद्ध-जैन दर्शन एवं महाभारत, रामायण, विभिन्न पुराण, उपासनाओं आदि से संबंधित ग्रंथ महत्त्वपूर्ण स्रोत के रूप में संकलित हैं, जिसका सीमित ज्ञान सीमित लोगों को है।

ऊपर वर्णित परंपरागत स्रोत सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं आध्यात्मिक तत्त्व अर्थात् मानवीय क्रियाओं के विभिन्न पक्षों को स्पर्श करते हैं। परंपरागत भारतीय मूल्यों में समय-समय पर परिवर्तन होते रहे हैं, क्योंकि इस्लाम, ईसाई, पारसी आदि संस्कृतियों ने इसे व्यापक रूप में प्रभावित किया है, परन्तु आधुनिक युग में विवेकानन्द, गाँधी, नेहरू, तिलक, टैगोर आदि प्राचीन भारतीय दर्शन एवं आदर्श से प्रभावित थे। इसलिए स्वतंत्रता के बाद प्राचीन भारतीय स्वरूप के आधार पर ही नये भारतीय स्वरूप का निर्माण किया गया।

विश्व विचार के विकास में परंपरागत मूल्यों एवं विषयों का योगदान

विश्व दृष्टिकोण के परिप्रेक्ष्य में भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण ने व्यापक रूप में योगदान दिया है। इन तत्त्वों के योगदानों की व्याख्या निम्नलिखित रूप में की जा सकती है:

1. मध्यम मार्ग की व्यावहारिकता भारतीय संस्कृति की यह विशेषता रही है कि यहाँ के सभी भारतीयों ने आदर्श और

www.neerajbooks.com

दर्शन के मध्यम मार्ग के क्रियाकलापों को ही अपनाया था। एक बार बुद्ध ने कहा था कि *वीणा के तारों को इतना मत खींचो कि वे टूट जायें।* संस्कृत में यह कहा गया है कि *अति सर्वत्र वर्जयेत्,* अर्थात् जीवन के किसी भी क्षेत्र में अति का होना बहुत ही घातक है और अति की प्राप्ति अनैतिक बल से ही हो सकती है। इसलिए भारतीय ऋषि-मनीषी अति से घृणा करते आये हैं। भारतीय दर्शन में इसी कारण से मध्यम मार्ग का अवलम्बन किया गया है। भारतीय दर्शन सामाजिक, आर्थिक, आध्यात्मिक, धार्मिक एवं नैतिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए जीवन के चार आदर्श निर्धारित किये हैं जिन्हें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के रूप में जाना जाता है। इसी के आधार पर भारत में मानव-जीवन की परंपराएँ चली आ रही हैं। धर्म का अर्थ होता है ईश्वर एवं सामाजिक नियमों के प्रति हमेशा कर्त्तव्यपरायण रहना। अर्थ का अभिप्राय है जीवन में सुख की प्राप्ति के लिए धन का संग्रह करना। काम का अर्थ होता है सभी प्रकार के इन्द्रिय सुख प्राप्त करना। मोक्ष का अर्थ होता है जन्म और मृत्यु के बंधन से मुक्त होना। इन चार उद्देश्यों में धर्म और मोक्ष को विशेष महत्त्व दिया गया है, फिर भी अर्थ और काम की उपेक्षा नहीं की गयी है। मानव जीवन के लिए अनिवार्य तत्त्व के रूप में धर्मार्थ कामा, अर्थात् धर्म, अर्थ और काम को आवश्यक माना गया है। मोक्ष सबके लिए अनिवार्य नहीं है। काम की महत्ता को दर्शाते हुए खजुराहो और उड़ीसा के मंदिरों की मूर्तियाँ निर्मित की गई हैं। वात्स्यायन का कामसूत्र इसी तथ्य की ओर इंगित करता है, क्योंकि सृष्टि के लिए यह आवश्यक है। भारतीय संस्कृति में लक्ष्मी को विशेष महत्त्व दिया गया है। इसलिए 'सर्व दोष हरे लक्ष्मी' की कहावत प्रचलित है। यहाँ पर लक्ष्मी का संबंध अर्थ (धन) से है। इसलिए मानव जीवन में काम और अर्थ आवश्यक माने गए हैं, परन्तु दूसरी तरफ रामायण और महाभारत में आदर्श जीवन के रूप में इन तत्त्वों को विशेष महत्त्व नहीं दिया गया है। भगवद्गीता में श्री कृष्ण ने निष्काम साधना, अर्थात् बिना किसी फल प्राप्ति के निःस्वार्थ भाव से मनुष्य को ईश्वर का प्रतिबिम्ब मानकर उसकी आराधना तथा सेवा में लगे रहने को विशेष महत्त्व दिया है। भारतीय संस्कृति नैतिकतापूर्ण साधनों के द्वारा ही आदर्श की प्राप्ति चाहती है।

प्राचीन काल से ही आदर्श और व्यवहार में व्यापक मतभेद रहा है। इसलिए प्रश्न यह उठता है कि उन आदर्शों को जिन्हें हमारे ऋषि-मनीषियों ने बनाया, क्या हमने उन आदर्शों को व्यावहारिक जीवन में अपनाया है? यह एक विवादास्पद विषय है। फिर भी हमने ऐसी सामाजिक, आर्थिक, राजनितिक और धार्मिक अवस्था में पहुँचने का प्रयत्न किया है, जिसमें हम इस लोक और परलोक में सुखी जीवन जी सकें। भारतीय संस्कृति जड़ता में विश्वास नहीं करती है और क्रियात्मक प्रेरणाओं का खण्डन भी नहीं करती है। माइकल ब्रेकर इस बात को मानते हैं कि भारतीय दार्शनिक परंपरा का मूल तत्त्व महात्मा बुद्ध के समय से ही अनुकरणित होता आ रहा है। भारतीय दर्शन के अन्तर्गत बौद्ध मार्ग अतिवाद और चरमपंथी मार्ग को स्वीकार नहीं करता है, अर्थात् भारतीय दर्शन मध्यम मार्ग का अनुगामी है। भारतीय दर्शन के अन्तर्गत इस बात पर बल दिया गया है कि मानव जीवन दार्शनिक सापेक्षता, बौद्धिक उदारता, गुण और अवगुण के साथ-साथ मानव जीवन को मापता है, अर्थात् भारतीय दर्शन गुण और अवगुण दोनों को एक-दूसरे पर निर्भर तत्त्व मानता है, फिर भी सहिष्णुता के द्वारा समझौतावादी सिद्धांत का अवलम्बन करता है। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा है कि महा मानवेर समुद्रेर तीरे, अर्थात् भारत में विभिन्न धर्म, सभ्यता, संस्कृति इस तरह से मिश्रित हो गयी हैं कि सभी जातियों का इसमें आपस में विलय हो गया है। नेहरू जी का कहना ठीक ही है कि भारत ने विभिन्न धर्मों को अपनाया और सभी धर्मों के बीच सामंजस्य और सहयोग स्थापित किया। विभिन्न विरोधी विचारधाराओं के बावजूद भी भारतीय दर्शन की परंपरा रही है कि विभिन्न विरोधी विचारधाराओं को सामंजस्य के साथ संगठित करके उद्देश्य की प्राप्ति की जा सकती है।

भारत की इसी दार्शनिक परंपरा के कारण स्वतंत्रता के बाद शीत युद्ध के क्रम में विश्व को दो गुटों में से भारत ने बीच का रास्ता अपनाया। भारत ने न तो पश्चिमी उदारवाद और सैनिक गठबंधन का समर्थन किया और न ही सोवियत समानतावाद का पूर्णरूपेण समर्थन किया। भारत की मानसिकता रही है कि इसने मध्यम मार्ग अपनाते हुए व्यक्ति की गरिमा, नागरिक स्वतंत्रता का सम्मान, लोकतंत्र की राजनीतिक व्यवस्था और विधि के शासन का समर्थन किया। भारत ने इस क्षेत्र में पश्चिमी राजनीतिक व्यवस्था के प्रति स्नेह दिखाया और सोवियत प्रणाली के द्वारा समानता के आधार पर न्याय, उपनिवेशवाद और नस्लवाद के विरोध का मार्ग अपनाकर किसी भी गुट का पक्ष लेने से इंकार करते हुए दोनों गुटों के बीच के मार्ग को अपनाकर एक नयी राजनीतिक यात्रा प्रारंभ की। नेहरू जी ने कहा था कि भारत अपने को गुट की राजनीति से दूर रखता है। यह घृणा, आंतरिक कलह, प्रतिस्पर्धा के बावजूद भी विश्व में सहयोग और प्रेम की दिशा में आगे बढ़ रहा है। भारत का यह सिद्धान्त दोनों गुटों से मित्रता का सिद्धांत था। इस सिद्धांत के द्वारा भारत ने युक्तिपूर्वक बहुत-से छोटे-छोटे राष्ट्रों को स्वतंत्रता का मार्ग दिखलाया तथा दो गुटों के आपसी संघर्ष से अलग रहते हुए, गुटनिरपेक्षता की नीति का अवलम्बन करते हुए एक नये पथ का निर्माण किया, जो विश्व के सभी देशों के लिए अनुकरणीय हो गया। यही कारण है कि विश्व की राजनीति में भारत ने अपना

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

विशिष्ट स्थान बना लिया है, और विश्व के अधिकांश राष्ट्र भारत के दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं।

भारतीय सहनशीलता की परम्परा

भारतीय मानसिकता के अंतर्गत जो भाव छिपा हुआ है, वह अतिवाद को अस्वीकार करते हुए तर्क और विवेक के आधार पर ऐसी व्यवस्था में विश्वास करता है जो घमंड और श्रेष्ठता की भावना से रहित है। भारतीय संस्कृति इस बात में विश्वास करती है कि आपसी क्षेत्र में वाद-विवाद के द्वारा ज्ञान की प्राप्ति होती है और विवेक के आधार पर ही मनुष्य सामान्य जीवन जी सकता है। भारतीय दर्शन का मूल तत्त्व है, विवेक के आधार पर मनुष्य के जीवन के तीन लक्ष्यों धर्म, अर्थ और काम की प्राप्ति की जाए। महाभारत में भी विवेक के आधार पर तत्त्वों की परख करना और गुण-दोषों का तुलनात्मक अध्ययन करके गुण के प्रति आकर्षण के सिद्धांत को अपनाया गया है।

भारतीय संस्कृति कर्त्तव्य पर विशेष बल देती है और कर्त्तव्य के पालन में घमंड और पराकाष्ठा का विरोध करती है। भारतीय संस्कृति सत्य पर एकाधिकार को स्वीकार नहीं करती। यह दूसरे लोगों को भी सत्य की ओर बढ़ने को प्रेरित करती है। भारतीय दर्शन का कहना है कि एक सत्य अनेक रूपों में प्रकट हो सकता है। इसलिए उपनिषदों में कहा गया है कि एको सद् विप्रा वहुधा वदन्ति, अर्थात् सत्य एक ही है, विद्वान लोग इसे विभिन्न रूपों में व्यक्त करते हैं। उपनिषद् में इस बात को स्पष्ट किया गया है कि विभिन्न रंग की गायों का दूध उजला ही होता है। इससे स्पष्ट होता है कि विभिन्न जाति, धर्म और सम्प्रदायों के बावजूद भी एक ही आत्मा का संचार सभी प्राणियों में होता है और लक्ष्य एक ही होता है; उसके मार्ग विभिन्न हो सकते हैं।

भारतीय संस्कृति का सारतत्त्व है सहिष्णुता। केवल धर्म ग्रंथों का ही नहीं वरन् सामाजिक जीवन का यही व्यावहारिक सत्य है। यही कारण है कि विभिन्न जातियाँ, जैसे ईसाई, यहूदी, पारसी जब भारत आये, तो उनके प्रति घृणा का व्यवहार प्रदर्शित नहीं किया गया, वरन् स्वतंत्रतापूर्वक अपने जीवन का निर्वाह करने और इच्छानुसार धर्म मानने तथा उसका प्रचार करने का परिवेश उन्हें प्रदान किया गया। भारतीय संस्कृति में सहिष्णुता सम्राट् अशोक के समय से ही विशेष रूप में व्यवहृत हो रही है। इसीलिए भारत में सभी जातियों और सभी धर्मों के बीच आपसी प्रेम-व्यवहार के अनेकों उदाहरण मिलते हैं। बादशाह अकबर ने दीन-ए-इलाही के द्वारा हिन्दू और मुसलमानों के बीच सौहार्द एवं प्रेम की मित्रता का अवलम्बन किया। अकबर के समय में रहीम और तुलसीदास दो धर्मों का अवलम्बन करते हुए भी आपस में मित्रवत् व्यवहार करते थे। हिन्दुओं ने मुसलमानों के साथ सहिष्णुता और सौहार्द का व्यवहार किया और मुसलमानों ने भी ऐसा ही किया। शाहजहाँ के ज्येष्ठ पुत्र दारा शिकोह ने उपनिषदों का फारसी में अनुवाद किया और मुगलकाल में दोनों जातियाँ आपस में मिल-जुलकर रहा करती थीं। आज की जातिगत और धार्मिक हिंसा को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि बीते हुए समय में आज की अपेक्षा अधिक प्रेम, सहिष्णुता और सौहार्द का वातावरण था। इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन का मूल आधार सहिष्णुता है। इसी कारण से स्वतंत्रता के बाद भारत में धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत को अपनाया गया।

सहिष्णुता भारतीय संस्कृति की एक अभिन्न कड़ी है। इसीलिए स्वतंत्रता के बाद भारत ने विश्व राजनीति के अंतर्गत अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों को गुट के माध्यम से अपनाने का प्रयत्न नहीं किया, वरन् गुट से अलग रह कर दोनों गुटों के प्रति सद्भाव रखते हुए एक अलग रास्ता अपनाया, जिसे गुटनिरपेक्षता का रास्ता कहते हैं। यह रास्ता दोनों गुटों को सत्य की ओर प्रेरित करने का रास्ता है और असत्य की अस्वीकृति का द्योतक है। भारत ने इसी कारण गुटनिरपेक्षता की नीति का अवलम्बन किया और विश्व में शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की भावना के आधार पर सभी देशों से मित्रतापूर्ण संबंधों की स्थापना की।

भारत सहिष्णुता और सहयोग में अधिक विश्वास करता है। नेहरू जी का विचार था कि सहिष्णुता और सहयोग प्रजातंत्र का सार है। जब गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के सम्बन्ध में तत्कालीन अमेरिकी विदेश मंत्री जॉन फॉस्टर डलेस और उपराष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने 1950 में असंसदीय भाषा का प्रयोग करते हुए निंदा की थी, तो पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि प्रजातंत्र में सहिष्णुता आवश्यक है, इसमें विरोधियों को भी बर्दाश्त करना पड़ता है और उसके साथ-साथ प्रेम और सहयोग स्थापित करके समस्या का समाधान किया जाता है।

सहिष्णुता भारतीय संस्कृति एवं दर्शन का सार तत्त्व है। हर युग में भारतीय दार्शनिक और विद्वान सहिष्णुता को महत्त्व देते रहे हैं। महात्मा गाँधी ने सहिष्णुता के आधार पर ही अंग्रेजों से वार्ता के द्वारा समस्या का समाधान करना चाहा। महाभारत में कृष्ण ने भी वार्ता के सिद्धांतों के आधार पर ही समस्याओं के समाधान का रास्ता अपनाया था। स्वतंत्रता के बाद 12 जनवरी, 1951 में रेडियो के राष्ट्रीय प्रसारण के दौरान अपने भाषण में तथा अनेकों बार अन्य सभाओं में भी इस बात पर बल दिया गया था कि शांति की स्थापना, शांति की प्रवृत्ति के विकास से ही संभव हो सकती है। इसके लिए अधिकतम मात्रा में मित्र बनाना और लोगों के मन में उत्पन्न संदेहों को दूर करना आवश्यक होता है। इसलिए नेहरू जी सहिष्णुतापूर्वक वार्ता के द्वारा किसी भी समस्या के समाधान के

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

पक्षपाती थे। 1954 मे पंचशील के सिद्धांत को अपनाते हुए चीन के साथ समझौते में उन्होंने सहअस्तित्व की भावना को विशेष महत्त्व दिया था, क्योंकि सहअस्तित्व की भावना सहिष्णुता और सौहार्द के वातावरण में ही उपयोगी सिद्ध हो सकती है। पं. नेहरू ने 1959 में चीन के साथ सीमा-विवाद की समस्या को वार्ता के द्वारा हल करने का प्रयत्न किया और 1962 में जब चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया था, तो उस समय भी पं. नेहरू ने भारत और चीन की आपसी वार्ता के द्वारा समस्याओं के समाधान पर बल दिया था। 1962 में युद्ध के बाद कोलंबो प्लान को स्वीकार करने को भारत की सहिष्णुता की नीति का द्योतक माना जा सकता है। लम्बे समय से चीन के साथ मतभेद रहने के बावजूद भी संबंध को सुधारने की दिशा में 2003 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने भी वार्ता के द्वारा समस्याओं के समाधान की पहल की थी। भारत-पाकिस्तान के बीच मधुर संबंधों की स्थापना के लिए भारतीय नेता हमेशा वार्ता के मार्ग को ही महत्त्वपूर्ण मानते रहे और पाकिस्तान ने जबसे इसके महत्त्व को जाना है, तभी से धीरे-धीरे पाकिस्तान कश्मीर समस्या को वार्ता द्वारा हल करने की दिशा में अग्रसर हो रहा है। इस तरह भारत ने हमेशा सहिष्णुता, सौहार्द, सहयोग और शांति के पक्ष में अपना विचार व्यक्त किया है तथा वार्ताओं के द्वारा समस्याओं के समाधान के मार्ग को अपनाया है। यह भारतीय दर्शन, संस्कृति एवं परंपरा की महत्त्वपूर्ण विशेषता रही है।

भारतीय दर्शन की परंपरा (यथार्थवाद एवं आदर्शवाद)

भारतीय दर्शन के अन्तर्गत राज्यों के संबंध में दो प्रकार की विचारधाराएं प्रारम्भ से ही व्यवहृत होती चली आ रही हैं। इन दो धाराओं को यथार्थवाद और आदर्शवाद के नाम से पुकारा जाता है। यथार्थवाद के अनेक प्रमाण कौटिल्य के अर्थशास्त्र, पंचतंत्र, याज्ञवल्क्य स्मृति, मनु स्मृति आदि ग्रंथों में मिलते हैं। यथार्थवादी दार्शनिकों में इस बात पर एक राय है कि राज्य की सुरक्षा किसी भी दृष्टिकोण से की जानी चाहिए, और आवश्यकता पड़ने पर सारे भूभाग पर आधिपत्य स्थापित किया जाना चाहिए। इन विद्वानों का मत है कि समस्याओं के समाधान के लिए युद्ध का सहारा अंतिम साधन के रूप में लिया जा सकता है, क्योंकि युद्ध केवल अनैतिक ही नहीं, वरन् विध्वंसकारी भी है और इसमें विजय की संभावनाएं निश्चित नहीं होतीं। पंचतंत्र में इस बात पर बल दिया गया है कि राजनीति के अंतर्गत शांति व्यापक महत्त्व वाला तत्त्व है। इसकी स्थापना के लिए प्रयास किया जाना चाहिए और शांति के द्वारा ही समस्त समस्याओं का निदान होना चाहिए। यदि शांति के द्वारा समस्त समस्याओं का समाधान नहीं होता है, तो अंतिम समय में युद्ध का सहारा लिया जा सकता है। महाभारत में श्रीकृष्ण ने शांति की स्थापना के लिए पहले वार्ता के द्वारा ही प्रयास किया, परंतु जब इसमें सफलता नहीं मिली, तब अंत में युद्ध का सहारा लिया गया।

दूसरी तरफ भारतीय दर्शन का आदर्शवादी पक्ष अहिंसा, त्याग और पाप से मुक्ति के द्वारा मोक्ष की प्राप्ति का पथ प्रदर्शित करता है, क्योंकि उपनिषद् में अहिंसा के सिद्धांत को इसी आधार पर स्वीकार किया गया है। आदर्शवादी दार्शनिक इस बात पर बल देते हैं कि आत्मा विभाजित या अविभाजित जो हो, यह ईश्वर या सत्य है। यह सम्पूर्ण विश्व आत्मा की ही अभिव्यक्ति है और हम सभी जीव उसी शक्ति के एक अंश के रूप में हैं। इसी आत्मा की अनुभूति सत्य और पूर्णता की अनुभूति है। इसीलिए भारतीय दर्शन हिंसा का खण्डन करता है। बौद्ध और जैन दर्शन अहिंसा का प्रबल समर्थन करते हैं तथा हिंसा से परहेज करते हुए अहिंसा के व्यावहारिक रूप से पालन पर विशेष बल देते हैं। इस तरह से भारतीय दर्शन का आदर्शवादी पक्ष सत्य की ओर संकेत करता है। बौद्ध धर्म युद्ध और हिंसा को पाप के रूप में स्वीकारता है। इसीलिए सम्राट् अशोक ने हिंसा और युद्ध को त्याग कर प्रेम और सौहार्द के द्वारा व्यक्ति, व्यक्ति के संबंध की स्थापना करनी चाही। इसी सिद्धांत के आधार पर विभिन्न देशों के साथ अशोक ने मित्रतापूर्ण कूटनीतिक संबंधों की स्थापना की तथा युद्ध और आक्रमण रहित वातावरण का निर्माण करते हुए अपने शासन काल में शांति की स्थापना का विशेष रूप से प्रयत्न किया। प्राचीनकाल से भारतीय संस्कृति के आदर्श के रूप में यही परंपरा रही है।

इसी परंपरा के आधार पर महात्मा गाँधी ने आधुनिक युग में अहिंसा रूपी अस्त्र का उपयोग करते हुए दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों को सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए संगठित किया था और शांतिपूर्ण साधनों के द्वारा ही सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक लक्ष्यों को प्राप्त किया। महात्मा गाँधी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अहिंसा रूपी सिद्धांत के आधार पर ही विजय प्राप्त की तथा भारत को स्वतंत्र कराया। इसलिए अहिंसा भारत के लिए सुरक्षा का एक महत्त्वपूर्ण साधन बन गया। केवल इसी कारण से ही नहीं वरन् आधुनिक परमाणु युग में अहिंसा अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी बहुत महत्त्वपूर्ण तत्त्व बन गयी है। परमाणु अस्त्रों के द्वारा विश्व को संहार से बचाने के लिए भारत ने अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अहिंसात्मक दृष्टिकोण से ही नि:शस्त्रीकरण के सिद्धांत को समर्थन दिया है और भारत विश्वस्तर पर शांतिपूर्ण साधनों के द्वारा शांति की स्थापना का प्रयास करता रहा है। यही भारतीय दर्शन का वास्तविक एवं आदर्श यथार्थ है।

1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया। उसके बाद भारत के विश्व दृष्टिकोण में यथार्थवाद को महत्त्व दिया जाने लगा।

www.neerajbooks.com